अवधा अंतरस्सब्भंतराओ दो अप्पमत्तध्दाओ, तासिं बाहिरिया एक्का पमत्तध्दा सुध्दा । अंतरब्भंतराओ छ उवसामगध्दाओ, तासिं बाहिरियाओ तिण्णि खवगध्दाओ सुध्दाओ । अंतरब्भंतरिमाए उवसंतध्दाए एक्किक्किस्से खवगध्दाए अध्दं१ अवधा अंतरस्सब्भंतराओ दो अप्पमत्तध्दाओ, तासिं बाहिरिया एक्का पमत्तध्दा सुध्दा । अंतरब्भंतराओ छ उवसामगध्दाओ, तासिं बाहिरियाओ तिण्णि खवगध्दाओ सुध्दाओ । अंतरब्भंतरिमाए उवसंतध्दाए एक्किक्किस्से खवगध्दाए अध्दं१ (मु.-प्रतौ अब्भंतरिमाए इति पाठः ।) सुध्दं । अवसेसा अध्दठा अंतोमुहुत्ता । तेहि ऊणियाए पुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि पमत्तस्सुक्कस्संतरं ।

अप्पमतस्स उच्चदे- एक्को अप्पमत्तो खइयसम्मादिठी अपुव्वो (१) अणियट्टी (२)सुहुमो (३) उवसंतो (४) पुणो वि सुहुमो (५) अणियट्टी (६) अपुव्वो होदूण (७) कालं गदो समऊणतेत्तीससागरोवमाउठिदिएसु देवेसुववण्णो । तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो, अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे अप्पमत्तो जादो । लध्दमंतरं । (१)तदो पमत्तो (२) पुणो अप्पमत्तो । (३) उवरि छ अंतोमुहुत्ता । अंतरस्स अब्भंतरिमाओ छ उपसामगध्दाओ बाहिरिल्लियासु तिसु खवगध्दासु सुध्दाओ । अंतरब्भतरिमाए२ उवसंतध्दाए खवगध्दाए

अथवा, अन्तरके आभ्यन्तरी दो अप्रमत्तकाल है और उनके बाहरी एक प्रमत्तकाल शुध्द है । (अतएव घटाने पर शून्य शेष रहा, क्योंकि, अप्रमतसंयतके कालसे प्रमतसंयतका काल दूना होता है ।) तथा अन्तरके भीतरी छह उपशामककाल है, और उनके बाहरी तीन क्षपककाल शुध्द है । (अतएव घटा देने पर शेष कुछ नही रहा, क्योंकि, उपशमश्रेणीके कालसे क्षपकश्रेणीका काल दुगुना होता है ।) अन्तरके भीतरी उपशामककालमेंसे एक एक क्षपककालके आधा घटाने पर क्षपककालका आधा शेष रहता है । इस प्रकार सब मिलाकर साढे तीन अन्तर्मुहुर्त अवशेष रहे । उन साढे तीन अन्तर्मुहूर्तोसे कम पूर्वकोटीसे साधिक तेतीस सागरोपमकाल क्षायिकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर होता है ।

क्षायिक सम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर कहते है- एक अप्रमतसंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव अपूर्वकरण (१) अनिवृत्तिकरण (२) सूक्ष्मसाम्पराय (३) उपशान्तकषाय (४) होकर पुनरपि सूक्ष्मसाम्पराय (५) अनिवृत्तिकरण (६) अपूर्वकरण (७) होकर मरणको प्राप्त हुआ और एक समय कम तेतीस सागरोपमकी आयुस्थितिवाले देवोंमे उत्पन्न हुआ । वहांसे च्युत

हो पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और संसारके अन्तर्मुहूर्त अवशिष्ट रह जाने पर अप्रमतसंयत हुआ । इस प्रकार अन्तर लब्ध हो गया । (१)पश्चात् प्रमत्तसंयत (२) पुन: अप्रमत्तसंयत (३) हुआ । इनमें ऊपरके छह अन्तर्मुहूर्त और मिलाये । अन्तरके आभ्यन्तरी छह उपशामककाल है और बाहरी तीन क्षपककाल है, अतएव घटा देने पर शेष कुछ नही रहा ।

अध्दं सुध्दं । अवसेसा अध्दछट्ठंअंतोमुहुत्ता१ अध्दं सुध्दं । अवसेसा अध्दछट्ठंअंतोमुहुत्ता१ (मु.प्रतौ एअध्दटठअंतोमुहुत्ता इति पाठ: ।) । एदेहि ऊणपुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि अप्पमत्तुक्कस्संतरं ।

चदुण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं२ (चतुर्णामुपशमकानां नानाजीवापेक्षया सामान्यवत् ।स.सि.१,८.) ।।३४३।।

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ।।३४४।।

एदं पि सुगमं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं३ (एकजीवं प्रति त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि सातिरेकाणि ।स.सि.१,८.) ।।३४५।।

एदं पि अवगदत्थं ।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि४ (उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि सातिरेकाणि । स.सि.१,८.) ।।३४६।।

तं जहा- एक्को पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो । अट्ठवस्सेहि अंतोमुहुत्तब्भहिएहि (१) अप्पमत्तो जादो । (२) पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण तम्हि चेव खइयं पटवियं

अन्तरके भीतरी उपशान्तकालमेंसे क्षपककालका आधा घटाने पर आधा काल शेष रहा । अवशिष्ट साढे पांच अन्तर्मुहूर्त रहे । उनसे कम पूर्वकोटीसे साधिक तेतीस सागरोपमकाल क्षायिकसम्यग्दृष्टि अप्रमतसंयतका उत्कृष्ट अन्तर होता है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि चारों उपशामकोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय अन्तर होता है ।।३४३।।

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंमे उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ।।३४४।।

यह सूत्र भी सुगम है ।

उक्त जीवोका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ।।३४५।।

इस सूत्रका भी अर्थ ज्ञात है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर साधिक तेतीस सागरोपम है ।।३४६।।

जैसे- एक जीव पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमे उत्पन्न हुआ । आठ वर्षे व अन्तमुहुर्त (१) के बाद अप्रमतसंयत हुआ । (२) पुन: प्रमत्त और अप्रमत्तसंयत संबंधी सहस्त्रो परिवर्तनोंको करके उसी कालमें क्षायिकसम्यक्त्वको भी प्रस्थापनकर (३)

उवसमसेडीपाओग्गविसोहीए विसुध्दो (४) अपुव्वो (५) अणियट्टी (६) सुहुमो (७) उवसंतो (८) पुणो सुहुमो (९) अणियट्टी (१०) अपुव्वो जादो (११) अंतरिदो । पुव्वकोडिं संजममणुपालिय तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदिगेसु देवेसु उववण्णो । तदो चुदो पुव्वकोडाउगेसु मणुसेसु उववण्णो । अंतोमुहुत्तावसेसे जीविए अपुव्वो जादो । (१२)लध्दमंतरं । तदो अणियट्टी (१३) सुहुमो (१४) उवसंतो (१५) पुणो सुहुमो (१६) अणियट्टी (१७) अपुव्वो जादो । (१८)उवरि अप्पमत्तादिणवअंतोमुहुत्तेहि सिध्दिं गदो । एवमटवस्सेहि सत्तावीसअंतोमुहुत्तेहि ऊणदोपुव्व-कोडीहि सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतरं । एवं चेव१ (ता. १-२प्रत्यो: एवं तिण्ह इति पाठ: ।) तिण्हमुवसामगाणं । णवरि पंचवीस तेवीस एक्कवीस मुहुत्ता ऊणा कादव्वा ।

चदुण्हं खवा अजोगिकेवली ओघं२ (शेषाणां सामान्यवत् ।स.सि.१,८.) ।।३४७।।

सजोगिकेवली ओघं ।।३४८।।

उपशमश्रेणीके योग्य विशुध्दिसे विशुध्द हो (४) अपूर्वकरण (५) अनिवृत्तिकरण (६) सूक्ष्मसाम्पराय (७) उपशान्तकषाय (८) हो, पुन: सूक्ष्मसाम्पराय (९) अनिवृत्तिकरण (१०) अपूर्वकरण हुआ (११) और अन्तरको प्राप्त हो गया । पुन: पूर्वकोटी तक संयमको परिपालनकर तेतीस सागरोपमकी आयुस्थितिवाले देवोमे उत्पन्न हुआ । वहांसे च्युत हो पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योमे उत्पन्न

हुआ। जीवनके अन्तर्मुहूर्त अवशिष्ट रह जाने पर अपूर्वकरण हुआ। (१२)इस प्रकार अन्तर लब्ध हो गया। पुन : अनिवृत्तिकरण (१३) सूक्ष्मसाम्पराय (१४) उपशान्तकषाय (१५) पुनः सूक्ष्मसाम्पराय (१६) अनिवृत्तिकरण (१७) और अपूर्वकरण (१८) हुआ। पश्चात ऊपरके अप्रमत्तादि गुणस्थानसंबंधी नौ अन्तर्मुहूर्तोंसे सिध्दिको प्राप्त हुआ। इस प्रकार आठ वर्षोसे और सत्ताईस अन्तर्मुहूर्तोंसे कम दो पूर्वकोटियोंसे साधिक तेतीस सागरोपमकाल क्षायिकसम्यग्दृष्टि अपूर्वकरणसंयतका उत्कृष्ट अन्तर है। इसी प्रकार शेष तीन उपशामकोंका भी अन्तर जानना चाहिए। विशेषता यह है कि अनिवृत्तिकरण उपशामकके पच्चीस अन्तर्मुहूर्त, सूक्ष्मसाम्पराय उपशामकके तेवीस अन्तर्मुहूर्त और उपशान्तकषायके इक्कीस अन्तर्मुहूर्त कम करना चाहिए।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि चारों क्षपक और अयोगिकेवलीका अन्तर ओघके समान है ।।३४७।।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि सयोगिकेवलीका अन्तर ओघके समान है ।।३४८।।

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि।

वेदगसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिट्ठीणं सम्मादिठिभंगो१ (क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टिष्वसंयतसम्यग्दृष्टेर्नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम् । एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः। उत्कर्षेण पूर्वकोटी देशोना। स.सि.१,८.) ।।३४९।।

सम्मतमग्गणाए ओघम्हि जधा अंसंजदसम्मादिट्ठीणमंतरं परुविदं तधा एत्थ वि परुवेदव्वं२ (ता.१-मु.प्रतौ परुविदव्वं इति पाठः।)

संजदासंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं३ (संयतासंयतस्य नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम् ।स.सि.१,८.) ।।३५०।।

सुगममेदं।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं४ ।।३५१।।

एदं पि सुगमं।

उक्कस्सेण छावटि सागरोवमाणि देसूणाणि५ (उत्कर्षेण षट्षष्टिसागरोपमाणि देशोनानि ।स.सि.१,८.) ।।३५२।।

ये दोनो ही सूत्र सुगम है।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमे असंयतसम्यग्दृष्टियोका अन्तर सम्यग्दृष्टिसामान्यके समान है ॥३४९॥

जिस प्रकारसे सम्यक्त्वमार्गणाके ओघमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अन्तर कहा है, उसी प्रकारसे यहां पर भी कहना चाहिए।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमे संयतासंयतोका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३५०॥

यह सूत्र सुगम है।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३५१॥

यह सूत्र भी सुगम है।

उक्त जीवोका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम छयासठ सागरोपम है ॥३५२॥

तं जहा- एक्को मिच्छादिट्ठी वेदगसम्मतं संजमासंजमं च जुगवं पडिवण्णो। अंतोमुहुत्तमच्छिय संजमं पडिवण्णो अंतरिदो। जत्तियं कालं संजमासंजमेण संजमेण च अच्छिदो तेत्तियमेत्तेणूणतेत्तीससागरोवमाउटिदिदेवेसु उववण्णो। तदो चुदो मणुसेसु उववण्णो। तत्थ जत्तियं कालं असंजमेण संजमेण वा१ (ता.१प्रतौ असंजमेण वा इति पाठः।) अच्छिदि, पुणो सग्गादो मणुसगदिमागंतूण जं वासपुधत्तादिकालमच्छिस्सदि तेहि दोहि वि कालेहि ऊणतेत्तीससागरोवमआउटिदिएसु देवेसु उववण्णो। तदो चुदो मणुसो जादो। बे अंतोमुहुत्तावसेसे वेदगसमत्तकाले परिणामपच्चएण संजमासंजमं पडिवण्णो। लध्दमंतरं। तदो अंतोमुहुत्तेण दंसणमोहणीयं खविय खइयसम्मादिटी जादो। आदिल्लमेक्कं अंतिल्ला दुवे२ (मप्रतौ दुमे इति पाठः।) अंतोमुहुत्ता, एदेहि तीहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाणि छावटिसागरोवमाणि संजदासंजदुक्कस्संतरं।

पमत्त- अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं३ (प्रमत्ताप्रमत्तसंयतायोर्नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम् ।स.सि.१,८.) ॥३५३॥

सुगममेदं।

जैसे- एक मिथ्यादृष्टि जीव वेदकसम्यक्त्व और संयमासंयमको एक साथ प्राप्त हुआ। अन्तर्मुहूर्त रह कर पुन: संयमको प्राप्त हो अन्तरको प्राप्त हुआ। पुन: मरणकर जितने काल संयमासंयम और संयमके साथ रहा था उतने ही कालसे कम तेतीस सागरोपमकी आयुस्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहांसे च्युत हो मनुष्योंमे उत्पन्न हुआ। वहां पर जितने काल असंयमके अथवा संयमके साथ रहा है और स्वर्गसे मनुष्यगतिमे आकर जितने वर्षपृथक्त्वादि काल असंयम अथवा संयमके साथ रहेगा उन दोनों ही कालोसे कम तेतीस सागरोपमकी आयुस्थितीवाले देवोंमे उत्पन्न हुआ। वहांसे च्युत हो मनुष्य हुआ। इस प्रकार वेदसम्यक्त्वके कालमें दो अन्तर्मुहूर्त अवशिष्ट रह जाने पर परिणामोंके निमित्तसे संयमासंयमको प्राप्त हुआ। तब अन्तर लब्ध हुआ। पुन: अन्तर्मुहूर्तसे दर्शनमोहनीयका क्षपणकर क्षायिकसम्यग्दृष्टि हो गया। इस प्रकार आदिका एक और अन्तके दो अन्तर्मुहूर्त, इन तीन अन्तर्मुहूर्तोसे कम छ्यासठ सागरोपमकाल वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतका उत्कृष्ट अन्तर है।

वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयतोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नही है, निरन्तर है ॥३५३॥

यह सूत्र सुगम है।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं१ (एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्त: ।स.सि.१,८.) ॥३५४॥

एदं पि सुगमं।

उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि२ (उत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि सातिरेकाणि। स.सि.१,८.) ॥३५५॥

तं जहा- एक्को पमत्तो अप्पमत्तो होदूण अंतोमुहुत्तमच्छिय समऊण३ तं जहा- एक्को पमत्तो अप्पमत्तो होदूण अंतोमुहुत्तमच्छिय समऊण३ (मु.प्रतौ मिच्छय तेत्त्‍ीस इति पाठ: ।) तेतीस-सागरोवमाउटिदिएसु देवेसुववण्णो। तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसुववण्णो।

अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे पमत्तो जादो। लध्दमंतरं। खइंय पट्ठविय खवगसेडीपाओग्गअप्पमत्तो होदूण (२) खवगसेढिमारुढो अपुव्वादि छअंतोमुहुत्तेहि णिव्वुदो। अंतरस्स आदिल्लमेक्कमंतोमुहुत्तं अंतरबाहिरेसु अटअंतोमुहुत्तेसु सोहिदे अवसेसा सत्त अंतोमुहुत्ता। एदेहि ऊणपुव्वकोडीए सादिरेयाणि तेत्तीसं सागरोवमाणि पमत्तसंजदुक्कस्संतरं।

अप्पमतस्स उच्चदे- एक्को अप्पमत्तो पमत्तो होदूण अंतोमुहुत्तमच्छिय (१) समऊणतेत्तीससागरोवमाउटिदिदेवेसु उववण्णो। तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु४ अप्पमतस्स उच्चदे-एक्को अप्पमत्तो पमत्तो होदूण अंतोमुहुत्तमच्छिय (१)समऊणतेत्तीससागरोवमाउटिदिदेवेसु उववण्णो। तदो चुदो पुव्वकोडाउएसु४(मु.प्रतौ पुव्वकोडएसु इति पाठः।) मणुसेसु

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३५४॥

यह सूत्र भी सुगम है।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर साधिक तेतीस सागरोपम है ॥३५५॥

जैसे- एक प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत हो अन्तर्मुहूर्त रहकर एक समय कम तेतीस सागरोपमकी आयुस्थितिवाले देवोंमे उत्पन्न हुआ। वहांसे च्युत हो पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमे उत्पन्न हुआ। संसारके अन्तर्मुहूर्तप्रमाण अवशिष्ट रह जाने पर प्रमत्तसंयत हुआ। इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ। पुनः क्षायिकसम्यक्त्वको प्रस्थापितकर क्षपकश्रेणीके योग्य अप्रमत्तसंयत हो (२) क्षपकश्रेणीपर चढा और अपूर्वकरणादि छह अन्तर्मुहूर्तोसे निर्वाणको प्राप्त हुआ। अन्तरके आदिके एक अन्तर्मुहूर्तको अन्तरके बाहिरी आठ अन्तर्मुहूर्तोमेंसे कम कर देने पर अवशिष्ट सात अन्तर्मुहूर्त रहते है, इनसे कम पूर्वकोटीसे साधिक तेतीस सागरोपमकाल प्रमत्तसंयत का उत्कृष्ट अन्तर है।

वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयतका अन्तर कहते है- एक अप्रमत्तसंयत जीव, प्रमत्तसंयत हो अन्तर्मुहूर्त रहकर (१) एक समय कम तेतीस सागरोपमकी आयुस्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहांसे च्युत हो पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमे उत्पन्न हुआ। आयुके अन्तर्मुहूर्त अवशिष्ट

उववण्मो। अंतोमुहुत्तवसेसे आउए अप्पमत्तो जादो। लध्दमंतरं (१) तदो१ उववण्मो। अंतोमुहुत्तवसेसे आउए अप्पमत्तो जादो। लध्दमंतरं (१) तदो१ (मु.प्रतौ पमत्तापमत्त इति पाठः।)

पमत्ता पमत्तसंजदठाणे खइयं पट्ठवियं (२) खवगसेडीपाओग्गअप्पमत्तो होदूण (३) खवगसेढीमारुढो अपुव्वादिछहि अंतोमुहुत्तेहि णिव्वुदो । अंतरस्सादिल्लमेकं बाहिरेसु णवसु अंतोमुहुत्तेसु सोहिदे अवसेसा अट्ठ । एदेहि ऊणपुव्वकोडीए सादिरेयाणितेत्तीस सागरोवमाणि अप्पमत्तुक्कस्संतरं ।

उवसमसम्मादिट्ठीसु असंजदसम्मादिटीणमंतरं केव्रचिरं कालादो होदि, णाणजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं२ (औपशमिकसम्यग्दृष्टिष्वसंयतसम्यग्दृष्टेर्नानाजीवापेक्षया जघन्येनैक: ।स.सि.१,८.) ।।३५६।।

णिरंतरमुवसमसम्मत्तं पडिवज्जमाणजीवाभावा ।

उक्कस्सेण सत्ता रादिंदियाणि३ (उत्कर्षेण सप्त रात्रिदिनानि ।स.सि.१,८.) ।।३५७।।

किमत्त्थो सत्तरादिंदियविरहणयमो ? सभावादो ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं४ (एकजीवं प्रति जघन्यमुत्कृष्टं चान्तर्मुहूर्त: ।स.सि.१,८.) ।।३५८।।

तं जहा- एक्को उवसमसेढीदो ओदरिय असंजदो जादो । अंतोमुहुत्तमच्छिदूण

रह जाने पर अप्रमत्तसंयत हुआ । इस प्रकार अन्तर लब्ध हो गया (१) । तत्पश्चात् प्रमत या अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें ।क्षायिसम्यक्त्वको प्रस्थापितकर (२) ।क्षपकश्रेणीकेप्रायोग्य अप्रमतसंयत होकर (३) । क्षापकश्रेणीपर चढा और अपूर्वकरणादि छह अन्तर्मुहूर्तोसे निर्वाणको प्राप्त हुआ । अन्तरके आदिका एक अन्तर्मुहूर्त बाहरी नौ अन्तर्मुहूर्तोसे घटा देने पर अवशिष्ट आठ अन्तर्मुहूर्त रहे । इनसे कम पूर्वकोटीसे साधिक तेतीस सागरोपमकाल वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर होता है ।

उपशमसम्यग्दृष्टियोमे असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है ।।३५६।।

क्योंकि, निरन्तर उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाले जीवोंका अभाव है ।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर सात रात-दिन (अहोरात्र) है ।।३५७।।

शंका- सात रात-दिनोंके अन्तरका नियम किसलिए है?

समाधान- स्वभावसे ही है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त है ॥३५८॥

जैसे- एक संयत उपशमश्रेणीसे उतरकर असंयतसम्यग्दृष्टि हुआ और अन्तर्मुहूर्त

संजमासंयजमं पडिवण्णो । अंतोमुहुत्तेण पुणो अंसजदो जादो । लध्दं जहण्णंतरं । उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥३५९॥

तं जहा- एक्को सेडीदो ओदरिय असंजदो जादो । तत्थ अंतोमुहुत्तमच्छिय संजमासंजमं पडिवण्णो । तदो अप्पमत्तो पमत्तो होदूण असंजदो जादो । लध्दमंतरं ।

संजदासंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं१ (संयतासंयतस्य नानाजीवापेक्षया जाघन्येनैक: ।समय: ।स.सि.१,८.) ॥३६०॥

सुगममेदं ।

उक्कस्सेण चोद्दस रादिंदियाणिं२ (उत्कर्षेण चतुर्दश रात्रिदिनानि ।स.सि.१,८.) ॥३६१॥

एदं पि सुगमं ।

एगजीवं पडुच जहण्णेण अंतोमुहुत्तं३ (एकजीवं प्रति जघन्यमुत्कृष्टं चान्तर्मुहूर्त: ।स.सि.१,८.) ॥३६२॥

तं जहा-एक्को उपसमसेढीदो ओदरिय संजमासंजमं पडिवण्णो । अंतोमुहुत्त-

----

रहकर संयमासंयमको प्राप्त हुआ । अन्तर्मुहूर्तसे पुन: असंयत हो गया । इस प्रकार जघन्य अन्तर लब्ध हुआ ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३५९॥

जैसे - एक संयत उपशमश्रेणीसे उतरकर असंयतसम्यग्दृष्टि हुआ । वहां अन्तर्मुहूर्त रहकर संयमासंयमको प्राप्त हुआ । पश्चात अप्रमत और प्रमत्तसंयत होकर असंयतसम्यग्दृष्टि हो गया । इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर लब्ध हुआ ।

उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासयंतोका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है ||३६०||

यह सूत्र सुगम है |

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर चौदह रात-दिन है ||३६१||

यह सूत्र भी सुगम है |

उक्त जीवोका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ||३६२||

जैसे- एक संयत उपशमश्रेणी उतरकर संयमासंयमको प्राप्त हुआ और अन्त-

----

मच्छिय असंजदो जादो | पुणो वि अंतोमुहुत्तेण संजमासंजमं पडिवण्णो | लध्दं जहण्णंतरं | उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ||३६३||

तं जहा- एक्को सेडीदो ओदरिय संजदासंजदो जादो | अंतोमुहूत्तमच्छिय अप्पमत्तो पमत्तो असंजदो च होदूण संजदासंजदो जादो | लध्दमुक्कस्संतरं |

पमत्त- अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं१ (प्रमत्ताप्रमत्तसंयतयोर्नानाजीवापेक्षया जघन्येनैक: समय: |स.सि.१,८.) ||३६४||

सुगममेदं |

उक्कस्सेण पण्णारस रादिंदियाणिं२ (उत्कर्षेण पंचदश रात्रिदिनानि |स.सि.१,८.) ||३६५||

एदं पि सुगमं |

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं३ (एकजीवं प्रति जाघन्यमुत्कृष्टं चान्तर्मुहूर्त: |स.सि.१,८.)||३६६||

तं जहा- एक्को उवसमसेढीदो ओदरिय पमत्तो होदूण अंतोमुहुत्तमच्छिय अप्प-

----

र्मुहुर्त रहकर असंयतसम्यग्दृष्टि हो गया | फिर भी अन्तर्मुहूर्तसे संयमासंयमको प्राप्त हुआ | इस प्रकार जघन्य अन्तर लब्ध हुआ |

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ||३६३||

जैसे- एक संयत उपशमश्रेणीसे उतरकर संयतासंयत हुआ । अन्तर्मुहूर्त रहकर अप्रमतसंयत, प्रमत्तसंयत और असंयतसम्यग्दृष्टि होकर संयतासंयत हो गया । इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर लब्ध हुआ।

उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है ||३६४||

यह सूत्र सुगम है।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर पन्द्रह रात-दिन है ||३६५||

यह सूत्र सुगम है।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ||३६६||

जैसे- एक संयत उपशमश्रेणीसे उतरकर प्रमत्तसंयत हो अन्तर्मुहूर्त रह कर

मत्तो जादो। पुणो वि पमत्तत्तं गदो। लध्दमंतरं। एवं चेव अप्पमत्तस्सं वि जहण्णंतरं वत्तव्वं।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ||३६७||

तं जहा- एक्को उपसमसेढीदो ओदरिय पमत्तो होदूण पुणो संजदासंजदो असंजदो अप्पमत्तो च होदूण पमत्तो जादो । लध्दमंतरं । अप्पमतस्स उच्चदे-एक्को सेडीदो ओदरिय अप्पमत्तो जादो । पुणो पमत्तो असंजदो संजदासंजदो च होदूण भूओ अप्पमत्तो जादो । लध्दमुक्कस्संतरं।

तिण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं१ (त्रयाणामुपशकाना नानाजीवापेक्षया जघन्येनैक: समय: ।स.सि.१,८.) ||३६८||

उक्कस्सेण वासपुधत्तं२ (उत्कर्षेण वर्षपृथक्त्वम् ।स.सि.१,८. ता.२ प्रतौ अंतोमंतोमुहुत्तं इति पाठः ।) ||३६९||

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि।

अप्रमत्तसंयत हुआ। फिर भी प्रमत्त गुणस्थानको प्राप्त हुआ। इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ। इसी प्रकारसे उपशमसम्यग्दृष्टि अप्रमतसंयतका भी जधन्य अन्तर कहना चाहिए।

उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ||३६७||

जैसे- एक संयत उपशमश्रेणीसे उतरकर प्रमत्तसंयत होकर पुन: संयतासंयत, असंयत और अप्रमतसंयत होकर प्रमतसंयत हुआ । इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ । उपशमसम्यग्दृष्टि अप्रमतसंयतका उत्कृष्ट अन्तर कहते है एक संयत उपशमश्रेणीसे उतरकर अप्रमत्तसंयत हुआ । पुन: प्रमत्तसंयत, असंयत और संयतासंयत होकर फिर भी अप्रमत्तसंयत हो गया । इस प्रकार उत्कृष्ट लब्ध हुआ ।

उपशमसम्यग्दृष्टि अपूर्वकरण, अनिवृतिकरण और सूक्ष्मसाम्पराय, इन तीनों उपशामकोंका अन्तर कितने काल तक होता है?नाना जीवोंकी अपेक्षा जधन्से एक समय अन्तर है ||३६८||

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ||३६९||

ये दोनो ही सूत्र सुगम है ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं१ (एकजीवं प्रति जघन्यमुत्कृष्टं चान्तर्मुहूर्त: ।स.सि.१,८.) ||३७०||

तं जहा- उपसमसेढिं चढिय आदिं करिय पुणो उवरिं गंतूण ओदरिय अप्पिदगुणं पडिवणस्स अंतोमुहुत्तमंतरं होदि ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ||३७१||

एदस्सं जहण्णभंगो । णवरि विसेसा२ एदस्सं जहण्णभंगो । णवरि विसेसा२ (मु.प्रतौ विसेसा इति पाठ: ।) बिदियवारं चढमाणस्स जहण्णंतरं, पढमवारं चढिय ओदिणस्स उक्कस्संतरं वत्तव्वं ।

उवसंतकसायवीदागछदुमत्थाणमंतरं केव्चिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमयं३ (उपशान्तकषायस्य नानाजीवापेक्षया सामान्यवत् ।स.सि.१,८.) ||३७२||

उक्कस्सेण वासपुधत्तं ||३७३||

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं४ (एकजीवं प्रति नास्त्यन्तरम् ।स.सि.१,८.) ||३७४||

उक्त तीनों उपशामकोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ||३७०||

जैसे- उपशमश्रेणीपर चढकर आदि करके फिर भी ऊपर जाकर और उतरकर विवक्षित गुणस्थानको प्राप्त होनेवाले जीवमें अन्तर्मुहूर्तप्रमाण जघन्य अन्तर होता है |

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहुर्त है ||३७१||

इस उत्कृष्ट अन्तरकी प्ररुपणा भी जघन्य अन्तरकी प्ररुपणाके समान जानना चाहिए | किन्तु विशेषता यह है कि उपशमश्रेणीपर द्वितीय बार चढनेवाले जीवके जघन्य अन्तर होता है और प्रथम बार चढकर उतरे हुए जीवके उत्कृष्ट अन्तर होता है, ऐसा कहना चाहिए |

उपशान्तकषाय वीतरागछद्मस्थ जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है ||३७२||

उक्त जीवोका उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ||३७३||

ये दोनो ही सूत्र सुगम है |

उपशान्तकषाय वीतरागछद्मस्थोंका एक जीवकी अपेक्षा नही है, निरन्तर है ||३७४||

हेट्ठिमगुणट्ठाणेसु अंतराविय सव्वजहण्णेण कालेण पुणो उवसंतकसायभावं गयस्य जहण्णंतरं किण्ण उच्चदे ण, हेटा ओइण्णस्स वेदगसम्मत्तमपडिवज्जिय पुव्वुवसम-सम्मत्तेणुवसमसेढीसमारुहणे संभवाभावादो | तं पि कुदो ? उवसमसेडीस-मारुहणपाओग्गकालादो सेसुवसमसम्मत्तध्दाए त्थोवत्तुवलंभादो | तं पि कुदो णव्वदे | उवसंतकसायएगजीवस्संतराभावण्णहाणकुववत्तीदो |

सासणसम्मादिट्ठि- सम्मामिच्छादिठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च जहण्णेण एयसमयं१ (सासादनसम्यग्दृष्टिसम्यग्मिथ्यादृष्टेयोर्नानाजीवापेक्षया जघन्येनैक: समय: |स.सि.१,८.) ||३७५||

सुगममेदं |

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो२ (उत्कर्षेण पल्योपमासंख्येयभाग: |स.सि.१,८.) ||३७६||

एदं पि सुगमं |

शंका- नीचेके गुणस्थानोमें अन्तरको प्राप्त कराकर सर्वजघन्य कालसे पुन: उपशातकषायताको प्राप्त हुए जीवके जघन्य अन्तर क्यों नही कहते है ?

समाधान-नही, क्योकि, उपशमश्रेणीसे नीचे उतरे हुए जीवके वेदकसम्यकत्वको प्राप्त हुए विना पहलेवाले उपशमसम्यक्त्वके द्वारा पुन: उपशमश्रेणीपर समारोहणं करनेकी सम्भावनाका अभाव है l

शंका- यह कैसे जाना?

समाधान- क्योंकि, उपशमश्रेणीके समारोहणयोग्य कालसे शेष उपशमसम्यक्त्वका काल अल्प पाया जाता है l

शंका- यह भी कैसे जाना ?

समाधान- उपशान्तकषायवीरागछद्यस्थके एक जीवके अन्तरका अभाव अन्यथा बन नही सकता, इससे जाना जाता है कि उपशमश्रेणीके समारोहण कालसे शेष उपशमसम्यक्त्व का काल अल्प है l

सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोकी अपेक्षा जघन्यसे एक समय अन्तर है ll३७५ll

यह सूत्र सुगम है l

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ll३७६ll

यह सूत्र भी सुगम है l

एगजीवं पडुच्च णत्थि अतरं,णिंरंतरं१ (एकजीवं प्रति नास्त्यन्तरम् lस.सि.१,८.) ll३७७ll

गुणंतरसंक्तीए२ गुणंतरसंक्तीए२ (ता.१मु.प्रत्यो: गुणंसंक्तीए इति पाठः l) असंभववादो l

मिच्छादिट्ठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणेगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं३ (मिथ्यादृष्टेर्नानाजीवापेक्षया एकजीवापेक्षया च नास्त्यन्तरम् lस.सि.१,८.) ll३७८ll

कुदो? णाणाजीवपवाहस्स वोच्छेदाभावा, गुणंतरसंक्तीए अभावादो l

एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता l

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिठीणमोघं४ (संज्ञानुवादेन संज्ञिषु मिथ्यादृष्टे: सामान्यवत् ।स.सि.१,८.) ||३७९||

कुदो? णाणाजीवं पडुच्च अंतराभावेण, एगजीवं पडुच्च अंतोमुहुत्त देसूणबे-छावटिसागरोवममेतजहण्णुक्कस्संतरेहि य साधम्मुवलंभा ।

सासणसम्मादिटिप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदागछदुमत्था त्ति पुरिसवेदभंगो५ (सासादनसम्यग्दृष्टिसम्यग्मिथ्यादृष्टयोर्नानाजीवापेक्षया सामान्यवत् । एकजीवं प्रति जघन्येन पल्योपमासंख्ययेय ।) ||३८०||

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नही है, निरन्तर है ||३७७||

क्योंकि, इन दोनोंका एक गुणस्थानसे दूसरे गुणस्थानमें परिवर्तन असम्भव है ।

मिथ्यादृष्टि जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना और एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नही है, निरन्तर है ||३७८||

क्योंकि, नाना जीवोंके प्रवाहका कभी विच्छेद नही होता है । तथा एक जीवका अन्य गुणस्थानोंमे संक्रमण भी नही होता है ।

इस प्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई ।

संज्ञीमार्गणाके अनुवादसे संज्ञी जीवोमें मिथ्यादृष्टियोका अन्तर ओघके समान है ||३७९||

क्योंकि, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरका अभाव होनेसे, एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट कुछ कम दो छयासठ सागरोपममात्र अन्तरोंकी अपेक्षा ओघसे समानता पाई जाती है ।

सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर उपशान्तकषायवीरागछद्मस्थ तक संज्ञी जीवोंका अन्तर पुरुषवेदियोंके अन्तरके समान है ||३८०||

कुदो? सागरोवमसदपुधत्तट्ठिदिं पडि दोण्हं साधम्मुवलंभा । णवरि असण्णिट्ठिदिमच्छिय सण्णीसुप्पणस्स उक्कस्सटिदी वत्तव्वा ।

चदुण्हं खवाणमोघं१ (चतुर्णा क्षपकाणां सामान्यवत् ।स.सि.१,८.) ||३८१||

सुगममेदं ।

असण्णीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं२ (असंज्ञिनां नानाजीवापेक्षयैजीवापेक्षया च नास्त्यन्तरम् ।स.सि.१,८.) ॥३८२॥

कुदो । असण्णिपवाहस्स वोच्छेदाभावा ।

एगजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं ॥३८३॥

कुदो? गुणसंकंतीए अभावादो ।

एवं सण्णिमग्गणा समत्ता ।

क्योंकि, सागरोपमशमपृथक्त्वस्थितिकी अपेक्षा दोनोंके अन्तरोंमें समानता पाई जाती है ।

विशेषता यह है कि असंज्ञी जीवोंकी स्थितिमे रहकर संज्ञी जीवोमे उत्पन्न हुए जीवके उत्कृष्ट स्थिति कहना चाहिए ।

संज्ञी चारों क्षपकोंका अन्तर ओघके समान है ॥३८१॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंज्ञी जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोकी अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३८२॥

क्योंकि, असंज्ञी जीवोंका प्रवाहका कभी विच्छेद नहीं होता है ।

असंज्ञी जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा अन्तर नही है, निरन्तर है ॥३८३॥

क्योंकि, असंज्ञियोंमें गुणस्थानके परिवर्तनका अभाव है ।

इस प्रकार संज्ञीमार्गणा समाप्त हुई ।

भागोऽन्तर्मुहूर्तश्च । उत्कर्षेण सागरोपमशतपृथक्त्वम् । असंयतसम्यग्दृष्ट्याद्यप्रमत्तान्तानां नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम् । एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः । उत्कर्षेण सागरोपमशतपृथक्त्वम् । चतुर्णामुपशमकानां नानाजीवापेक्षया सामान्यवत् । एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः । उत्कर्षेण सागरोपमशतपृथक्त्वम् । स.सि.१,८.

आहारणुवादेण आहारएसु मिच्छादिटीणमोघं१ (आहारानुवादेन आहारकेषु मिथ्यादृष्टेः सामान्यवत् ।स.सि.१,८.) ॥३८४॥

सुगममेदं ।

सासणसम्मादिटि-सम्मामिच्छादिठीणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च ओघं२ (सासादनसम्यग्दृष्टिसम्यग्मिथ्यादृष्टयोर्नानाजीवापेक्षया सामान्यवत् ।स.सि.१,८.) ॥३८५॥

एदं पि सुगमं ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, अंतोमुहुत्तं३ (एकजीवं प्रति जघन्येन पल्योपमासंख्येयभागोऽन्तर्मुहूर्तश्च ।स.सि.१,८.) ॥३८६॥

एदं पि अवगयत्थं ।

उक्कस्सेण अंगुलस्स अंसंखेज्जदिभागो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उसप्पिणीओ४ (उत्कर्षेणांगुलासंख्येयभागा अंसख्येया उत्सर्पिण्यवसिर्पण्य: ।स.सि.१,८.) ॥३८७॥

तं जहा- एक्को सासणध्दाए दो समया अत्थि ति कालं गदो । एगविग्गहं कादूण

आहारमार्गणाकेअनुवादसे आहारक जीवोंमे मिथ्यादृष्टियोका अन्तर ओघके समान है ॥३८४॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर ओघके समान है ॥३८५॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर क्रमश: पल्योपमका असंख्यातवां भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥३८६॥

इस सूत्रका अर्थ ज्ञात है ।

उक्त जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवे भागप्रमाण असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल है ॥३८७॥

जैसे- एक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव सासादनगुणस्थानके कालमें दो समय अवशिष्ट

बिदियसमए आहारी होदूण तदियसमए मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो । असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीओ परिभमिय अंतोमुहुत्तावसेसे आहारकाले उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो ।

एगसमयावसेसे आहारकाले सासणं गंतूण विग्गहं गदो। दोहि समएहि ऊणो आहारुक्कस्सकालो सासणुक्कस्संतरं।

एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण देवेसुववण्णो। छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुध्दो१ (ता.२प्रतौ त्तथदो (२) विसुध्दो इति पाठः।) (३) सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो। (४)मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो। अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं परिभमियं सम्मामिच्छत्तं पडिवण्णो। (५)लध्दमंतरं। तदो सम्मत्तेण वा मिच्छत्तेण वा अंतोमुहुत्तमच्छिदूण (६) विग्गहं गदो। छहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणओ आहारकालो सम्मामिच्छादिठिस्स उक्कस्संतरं।

असंजदसम्मादिठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि, णाणाजीवं पडुच्च णत्थि अंतरं, णिरंतरं२ (असंयतसम्यग्दृष्टयाद्यप्रमत्तान्तानां नानाजीवापेक्षया नास्त्यन्तरम् ।स.सि.१,८.) ॥३८८॥

सूगममेदं।

रहने पर मरणको प्राप्त हुआ। एक विग्रह (मोडा) करके द्वितीय समयमें आहारक होकर और तीसरे समयमें मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको प्राप्त हुआ। असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियां और उत्सर्पिणियों तक परिभ्रमणकर आहारककालमें अन्तर्मुहूर्त अवशिष्ट रह जाने पर उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ। पुनः आहारककालके एक समय मात्र अवशिष्ट रहने पर सासादनको जाकर विग्रह प्राप्त हुआ। इस प्रकार दो समयोंसे कम आहारकका उत्कृष्ट काल ही आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवका उत्कृष्ट अन्तर होता है।

मोहकर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला एक मिथ्यादृष्टि जीव विग्रह करके देवोंमें उत्पन्न हुआ। छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (१) विश्राम ले (२) विशुध्द हो (३) सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ (४) और मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको प्राप्त हुआ। अगुलके असंख्यवतें भाग कालप्रमाण परिभ्रमण कर सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ। (५)इस प्रकार अन्तर लब्ध हो गया। पीछे सम्यक्त्व अथवा मिथ्यात्वके साथ अन्तर्मुहूर्त रह कर (६) विग्रहगतिको प्राप्त हुआ। इस प्रकार छह अन्तर्मुहूर्तोसे कम आहारकाल ही आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवका उत्कृष्ट अन्तर होता है।

असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमतसंयत गुणस्थान तक आहारक जीवोंका अंतर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर नही है, निरन्तर है ||३८८||

यह सूत्र सुगम है |

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं१ (एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्त: |स.सि.१,८.)||३८९||

कुदो? गुणंतरं गंतूण सव्वजहण्णकालेण पुणो अप्पिगुणं पडिवण्णस्स जहण्णं-तरुवलंभा |

उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ२ (उत्कर्षेणांगुलासंख्येयभागा असंख्येया उत्सर्पिण्यवसर्पिण्य: |स.सि.१,८.) ||३९०||

असंजदसम्मादिटिस्स उच्चदे-एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण देवेसुववण्णो | छहि पज्जतीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुध्दो (३) वेदगसम्मत्तं पडिवण्णो | (४)मिच्छत्तं गंतूणंतरिदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं परिभमिय अंते उवसमसम्मत्तं पडिवण्णो | (५) लध्दमंतरं | उवसमसम्मत्तध्दाए छावलियावसेसाए सासणं गंतूण विग्गहं गदो | पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणओ आहार-कालो उक्कस्संतरं |

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त है ||३८९||

क्योंकि, विवक्षित गुणस्थानसे अन्य गुणस्थानको जाकर और सर्वजघन्य कालसे लौटकर पुन: अपने विवक्षित गुणस्थानको प्राप्त होनेवाले जीवके जघन्य अन्तर पाया जाता है |

उक्त असंयतादि चार गुणस्थानवर्ती आहारक जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी काल है ||३९०||

आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवका उत्कृष्ट अन्तर कहते है- मोहकर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला एक मिथ्यातृष्टि जीव विग्रह करके देवोमें उत्पन्न हुआ | छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (१) विश्राम ले (२) विशुध्द हो (३) वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ | (४) पीछे मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको प्राप्त हुआ और अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक परिभ्रमण करकेअन्तमें उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त हुआ | (५)इस प्रकार अन्तर लब्ध हो गया | पुन: उपशमसम्यक्त्वके कालमें छह आवलियां अवशिष्ट रह जाने पर सासादनमें जाकर विग्रहको

प्राप्त हुआ । इस प्रकार पांच अन्तर्मुहूर्तोसे कम आहारककाल ही आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवका उत्कृष्ट अन्तर होता है ।

संजदासंजदस्स उच्चदे-एक्को अटावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण सण्णी सम्मुच्छिमेसु१ संजदासंजदस्स उच्चदे-एक्को अटावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण सण्णी सम्मुच्छिमेसु१ (मु.प्रतौ कादूण सम्मुच्छिमेसु इति पाठः ।) उववण्णो । छहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदो (१) विस्संतो (२) विसुध्दो (३) वेदगसम्मत्तं संजमासंजमं च समगं पडिवण्णो । (४) मिच्छतं गंतूणंतरिदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं परिभमियं अंते पढमसम्मत्तं संजमासंजमं च समगं पडिवण्णो । (५)लध्दमंतरं । उवसमसम्मत्तध्दाए छावलियावसेसाए सासणं२ (ता.२प्रतौ साणंइति पाठः ।) गंतूण विग्गहं गदो । पंचहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणाओ आहारकालो उक्कस्संतरं ।

पमत्तस्स उच्चदे-एक्को अटावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण मणुसेसुववण्णो । गब्भदिअठवस्सेहि अप्पमत्तो (१) पम्मत्तो होदूण (२) मिच्छतं गंतूणंतरिदो । अंगुलस्स अंसंखेज्जादिभागं परिभमिय अंते पमत्तो जादो । लध्दमंतरं । (३)कालं कादूण वग्गहं गदो । तिहि अंतोमुहुत्तेहि अटवस्सेहि य ऊणओ आहारकालो उक्कस्संतरं ।

अप्पमत्तस्स एवं चेव । णवरि अप्पमत्तो (१) पमत्तो होदूण अंतरिदो सगठिदिं परिभमिय अप्पमतो होदूण (२) पुणो पमत्तो जादो । (३) कालं करिय विग्गंह गदो ।

आहारक संयतासंयतका उत्कृष्ट अन्तर कहते है - मोहकर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला एक मिथ्यादृष्टि जीव विग्रह करके संज्ञी पंचेन्द्रिय सम्मूर्च्छिमोंमें उत्पन्न हुआ । छहो पर्याप्तियोंसे पर्याप्त हो (१) विश्राम ले (२) विशुध्द हो (३) वेदकसम्यक्त्व और संयमासंयमको एक साथ प्राप्त हुआ (४) । पश्चात मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको प्राप्त हो अंगुलके असंख्यातवे भागप्रमाण काल तक परिभ्रमणकर अन्तमें प्रथमोपशमसम्यक्त्व और संयमासंयमको एक साथ प्राप्त हुआ (५) । इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ । पश्चात उपशमसम्यक्त्वके कालमें छह आवलियां अवशेष रहने पर सासादनको जाकर विग्रहको प्राप्त हुआ । इस प्रकार पांच अन्तर्मुहूर्तोसे कम आहारककाल ही आहारक संयतासंयतका उत्कृष्ट अन्तर है ।

आहारक प्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर कहते है- मोहकर्मकी अठाईस प्रकृतियोकी सत्तावाला एक जीव विग्रह करके मनुष्योंमे उत्पन्न हुआ । गर्भको आदि ले आठ वर्षोसे अप्रमत्तसंयत (१) और प्रमत्तसंयत हो (२) मिथ्यात्वको जाकर अन्तरको प्राप्त हुआ । अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक परिभ्रमण करकेअन्तमें प्रमत्तसंयत हो गया । इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ (३) । पश्चात् मरण करकेविग्रहगतिको प्राप्त हुआ । इस प्रकार तीन अन्तर्मुहूर्त और आठ वर्षोसे कम आहारककाल ही आहारक प्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर है ।

आहारक अप्रमत्तसंयतका भी अन्तर इसी प्रकार है । विशेषता यह है कि अप्रमतसंयत जीव (१) प्रमत्तसंयत होकर अन्तरको प्राप्त हो अपनी स्थितिप्रमाण परिभ्रमण कर अप्रमत्तसंयत हो (२) पुन: प्रमत्तसंयत हुआ (३) । पश्चात् मरण करकेविग्रहको प्राप्त हुआ । इस प्रकार तीन

....

तिहि अंतोमुहुत्तेहि ऊणो आहारकालो उक्कस्संतरं ।

चहुण्हमुवसामगाणमंतरं केवचिरं कालादो होदि,णाणाजीवं पडुच्च-ओघभंगो१ (चतुर्णामुपशमकानां नानाजीवापेक्षया सामान्यवत् ।स.सि.१,८.) ।। ३९१ ।।

सुगममेदं,बहुसो उत्तत्तादो ।

एगजीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं२ (एकजीवं प्रति जघन्येनान्तर्मुहूर्तः ।स.सि.१,८.) ।। ३९२ ।।

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अंगुलस्स अंसखेज्जदिभागो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ३ (उत्कर्षेणांगुलासंख्येयभागा असंख्येयासंख्येया उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः ।स.सि.१,८.) ।।३९३।।

तं जहा- एक्को अठावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण मणुसेसुववण्णो । अठवस्सिओ सम्मतं अप्पमत्तभावेण संजमं च समगं पडिवण्णो । (१) अंणंताणुबंधि४ तं जहा- एक्को अठावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण मणुसेसुववण्णो । अठवस्सिओ सम्मतं अप्पमत्तभावेण संजमं च समगं पडिवण्णो । (१)अंणंताणुबंधि४ (मु.प्रतौ अणंताणुबंधी इति पाठः ।) विसंजोएदूण (२)

दंसणमोहणीयमुवसामिय (३) पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (४) तदो अपुव्वो (५) अणियट्टी (६) सुहुमो (७) उवसंतो (८) पुणो वि परिवदमाणगो५

तं जहा- एक्को अट्ठावीससंतकम्मिओ विग्गहं कादूण मणुसेसुववण्णो । अठवस्सिओ सम्मतं अप्पमत्तभावेण संजमं च समगं पडिवण्णो । (१) अंणंताणुबंधि४ (मु.प्रतौ अणंताणुबंधी इति पाठः ।) विसंजोएदूण (२) दंसणमोहणीयमुवसामिय (३) पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण (४) तदो अपुव्वो (५) अणियटी (६) सुहुमो (७) उवसंतो (८) पुणो वि परिवदमाणगो५ (मु.प्रतौ परिवडमाणगो इति पाठः ।) सुहुमो (९) अणियटी (१०)

अन्तर्मुहूर्तोसे कम आहारककाल ही आहारक अप्रमत्तसंयतका उत्कृष्ट अन्तर है ।

आहारक चारों उपशामकोंका अन्तर कितने काल तक होता है? नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर ओघके समान है ।।३९१।।

यह सूत्र सुगम है । क्योंकि, इसका अर्थ पहले बहुत वार कहा जा चुका है ।

उक्त जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ।।३९२।।

यह सूत्र भी सुगम है ।

आहारक चारों उपशामकोका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर अंगुलके असंख्यावतें भागप्रमाण असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी है ।।३९३।।

मोहकर्मकी अठाईस प्रकृतियोंकी सत्तावाला एक मिथ्यादृष्टि जीव विग्रह करके मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । आठ वर्षेका होकर सम्यक्त्वको और अप्रमत्तभावके साथ संयमको एक साथ प्राप्त हुआ । (१)पुनः अनन्तानुबन्धीका विसंयोजन करके (२) दर्शनमोहनीयका उपशमनकर (३) प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थानसम्बन्धी सहस्त्रों परिवर्तनोंको करके (४) पश्चात अपूर्वकरण (५) अनिवृत्तिकरण (६) सूक्ष्मसमाम्पराय (७) और उपशान्तकषाय होकर (८) फिर भी गिरता

अपुव्वो जादो । (११)हेट्ठा ओदरिदूणंतरिदो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागं परिभमियं अंते अपुव्वो जादो । लध्दमंतरं । णिद्दा-पयलाणं बंधे वोच्छिण्णे मरिय विग्गहं गदो । अठवस्सेहि

वासअंतोमुहुत्तेहि य ऊणओ आहारकालो उक्कस्संतरं। एवं चेव तिण्हमुवसामगाणं। णवरि दस णव अठ अंतोमुहुत्ता समयाहिया ऊणा कादव्वा।

चहुण्हं खवाणमोघं१ (चतुर्णा क्षपकाणां सयोगकेवलिनां च सामान्यवत् ।स.सि.१,८.)॥३९४॥

सुगममेदं।

सजोगिकेवली ओघं१ (चतुर्णा क्षपकाणां सयोगकेवलिनां च सामान्यवत् ।स.सि.१,८.)॥३९५॥

एदं पि सुगमं।

अणाहारा२ अणाहारा२ (ता.प्रतौ अणाहार इति पाठः ।) कम्मइयकायजोगिभंगो३ (अनाहारकेषु मिथ्यादृष्टेर्नानाजीवापेक्षया एकजीवापेक्षया च नास्त्यन्तरम् । सासादनसम्यग्दृष्टेर्नानाजीवापेक्षया जघन्येनैकःसमयः । उत्कर्षेण पल्योपमासंख्येयभागः । एकजीवं प्रति नास्तय्न्तरम् । असंयतसम्यदृष्टेर्नानाजीवापेक्षया जघन्येनैकः समयः उत्कर्षेण मासपृथक्तवम् । एकजीवं प्रति नास्त्यन्तरम् । सयोगिकेवलिनां नानाजीवापेक्षया जघन्येनैकः समयः । उत्कर्षे वर्षपृथक्त्वम् । एकजीवं प्रति नास्त्यन्तरम् ।स.सि.१,८.) ॥३९६॥

हुआ सूक्ष्मसाम्पराय (९) अनिवृत्तिकरण (१०) और अपूर्वकरण हुआ। (११)पुनः नीचे उतरकर अन्तरको प्राप्त हो अंगुलके असंख्यातवें भाग कालप्रमाण परिभ्रमणकर अन्तमें अपूर्वकरण उपशामक हुआ। इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ। तत्पश्चात निद्रा और प्रचला, इन दोनों प्रकृतियोंके बंधसे व्युच्छिन्न होनेपर मरकर विग्रहको प्राप्त हुआ। इस प्रकार आठ वर्षे और बारह अन्तर्मुहूर्तोसे कम आहारककाल ही अपूर्वकरण उपशामकका उत्कृष्ट अन्तर है। इसी प्रकार शेष तीनों उपशामकोंका भी अन्तर कहना चाहिए। विशेषता यह है कि आहाककालमें अनिवृत्तिकरण उपशामककें दश, सूक्ष्मसाम्पराय उपशामकके नौ और उपशान्तकषाय उपशामकके आत अन्तर्मुहूर्त और एक समय कम करना चाहिए।

आहारक चारों क्षपकोंका अन्तर ओघके समान है ॥३९४॥

यह सूत्र सुगम है।

आहारक सयोगिकेवलीका अन्तर ओघके समान है ॥३९५॥

यह सूत्र सुगम है।

अनाहारक जीवोंका अन्तर कार्मणकाययोगियोंके समान है ll३९६ll

मिच्छादिट्ठीणं णाणेगजीवं पडडुच्च अंतराभावेण सासणम्माकदिठठीणं णाणाजीवं पडडुच्च एगसूयपलिदोवमस्स बसंखेज्जकदभागतहणुक्कस्संमरेहि य, एगजीवं पडुच्च अंमराभावेण असंजदसम्माद्विठीणं णाणाजीवं पडुच्च एगसूय वासधत्तंतरेहि य, एगजीवं पडुच्च अंतराभावेण य, सजोगिकेवलीणं णाणजीवं पडुच्च एगसमय-वासपुधत्तजहक्कस्संमरेहि य, एगजीवं पडुच्च अंतराभावेण य दोण्हं साधम्मवलंभादो विसेपदुप्पायणटठमुत्तरसुत्तं भणदि-

णवरि विसेसा, अजोगिकेवली ओघं१ (अयोगिकेवलिनां नानाजीवापेक्षया जघन्येनैक: समय: l उत्कर्षेण षण्मासा: l एकजीवं प्रति नास्त्यन्तरम् lस.सि.१,८.) ll३९७ll

सुगममेदं l

(एवं आहारमग्गणा समत्ता l)

एवंमतराणुगमो त्ति सूमत्तणिओगददरं२ (अन्तरमवगतम् l स.सि.१,८.) l

----

क्योंकि, मिथ्याष्टियोंका नाना और एक जीवकी अपंक्षा अभाव होनेसे सासादनम्यद्रष्टियोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य एक समय और उत्कष्ट पल्योपमका असंख्यातवां भाग, तथा एक जीवकी अपेक्षा अन्तरका अभाव होनेसे, असंयतसम्यग्दष्टियोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य ऐ समय और मासपथक्तव अन्मरोंके द्वारा, और एक जीवकी अपेक्षा जघन्य अन्तर अभाव होनेसे, सयोगिकेवलियोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य एक समय और वर्षपॅथकत्व अन्तरसेण तथा एक जीवकी अपेक्षा जघन्य एक समानता पाई जाती है l

अनाहरक जीवोमें विशेषता प्रतिपादन करनेके लिए उत्तर सूत्र कहते है ll३९७lll

यह सूत्र सुगम है l

इस प्रकार आहारमार्गणा समापत हुई l

इस प्रकार अन्तरानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ l